<u>विद्याश्री न्यास के आयोजन : 2022</u>

प्रमुख भारतीय भाषाएँ : समकालीन प्रवृतियाँ वेबिनार (12-14 जनवरी 2022)

विद्याश्री न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री पी. जी. कॉलेज दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में " प्रमुख भारतीय भाषाएँ : समकालीन प्रवृत्तियाँ" विषय पर केन्द्रित राष्ट्रीय वेबिनार(12-14 जनवरी 2022) का शुभारंभ उद्घाटन-समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी के द्वारा माँ सरस्वती और पं. विद्यानिवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्ज्वलन तथा प्रो. उमापति दीक्षित और पं. यज्ञ नारायण तिवारी के द्वारा पौराणिक और वैदिक मंगलाचरण से हुआ। स्वागत और प्रस्तावना का दायित्व डाॅ अरुणेश नीरन के न जुड़ पाने के कारण प्रकाश उदय ने निभाया। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी बात रखते हुए प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा(दिल्ली) ने समस्त भारतीय भाषाओं को एक ही सांस्कृतिक सूत्र में पिरोए होने के तथ्य को साहित्येतिहास के विभिन्न काल खंडों से विभिन्न भाषाओं के विभिन्न सृजन-संदर्भों के साथ सोदाहरण रेखांकित किया। प्रो शर्मा ने कहा कि विभिन्न भारतीय भाषओं के सर्जकों में मनुष्य को बचा लेने की एक सर्वव्यापी जिद दिखाई देती है। भारतीय भाषा की विभिन्न परंपराएँ सांस्कृतिक साझेदारी की उत्कंठा को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, जिससे समभाव का भाव उत्पन्न होता है और एक राष्ट्र की भावना दृढ़ होती है। मुख्य अतिथि प्रोफेसर श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, (कुलपति, इंदिरा गांधी जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक) ने भारत की विभिन्न भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने में हिंदी जो भूमिका निभा सकी है और निभा सकती है, उसकी विशद चर्चा की। उन्होंने इस दिशा में पंडित विद्यानिवास मिश्र के योगदान का भी स्मरण किया, प्रो त्रिपाठी ने कहा कि कोरोनाकाल के इस समय में भाषा का भावनात्मक और संवेदनात्मक पक्ष उभर कर सामने आया है, भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा साहित्य का सृजन होता है, साहित्य से समाज, संसार और हम सभी व्यक्त होते है। अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रोफेसर सदानंद गुप्त कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान (लखनऊ) ने भारतीय भाषाओं की एकता के सूत्रधार के रूप में रामायण और महाभारत जैसे उपनिषद ग्रंथों के साथ पुनर्जन्म और कर्मफल जैसी सर्वव्याप्त मान्यताओं का उल्लेख किया, उन्होंने बताया कि साझेदारी के साथ ही चराचरवाद की अवधारणा ने भी भारतीय मन मानस के साथ साहित्य संस्कृति और भाषा को भी जोड़े रखने का दायित्व निभाया है। प्रो गुप्ता ने कहा- भारतीय संस्कृति में प्रकृति और मनुष्य के बीच प्रतिदंद्विता नहीं है बल्कि हमारी दृष्टि चराचरवाद की है। भारतीय दृष्टि से अगर हम देखें तो मनुष्य का ये दायित्व है कि वह सभी का संरक्षण करे, पंडित जी भी इसी विचारधारा पर बल देते थे, पंडित विद्यानिवास जी के अनुसार - ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से जो ग्राह्य हो वो ही लोक है। विद्याश्री न्यास के सचिव डॉ दयानिधि मिश्र ने अतिथियों और सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। उद्घाटनसमारोह का संयोजन व संचालन के

दायित्व का निर्वाह प्रो. श्रद्धानंद ने किया।

प्रथम अकादमिक सत्र में प्रो. स्वर्णप्रभा चौनारी(गुवाहटी) ने बोडो भाषा की, डॉ. गोमा देवी शर्मा(गुवाहटी) ने नेपाली भाषा की, प्रो. ह. सुबदनी देवी (इम्फाल) ने मणिपुरी भाषा की और प्रो. दमयन्ती बेसरा (मयूरभंज,उड़ीसा) ने संथाली भाषा की भाषिक विशेषताओं पर ज्ञानप्रद और रोचक व्याख्यान प्रस्तुत किए. प्रो. दिलीप मेधी(गुवाहाटी) ने असमिया भाषा के परिचय के साथ ही अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए पूरे सत्र का समाहार भी किया और पूर्वोत्तर के प्रति शेष भारत के बढ़ते अनुराग और जिज्ञासा का भी स्वागत किया। इस सत्र का संचालन/धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सविता श्रीवास्तव।

दूसरे अकादमिक सत्र में कन्नड़, तेलुगु, मलयालम और तमिल भाषा-साहित्य को लेकर इनके अधिकारी विद्वानों, क्रमश: प्रो. श्रीधर आर. हेगड़े(कर्नाटक), प्रो. सुषमा देवी(तेलंगाना), डॉ. एप्सिलीन एम. एस. (एर्नाकुलम)तथा डा. गोविन्द राजन(चेन्नई) ने व्याख्यान प्रस्तुत किए अस्वस्थ होने के कारण उनका सम्पर्क टूट गया। प्रो. सोमा वंद्योपाध्याय(कलकत्ता) ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ ही बांग्ला भाषा-साहित्य की समकालीन प्रवृत्तियों का विशद विवेचन भी सामने रखा। इस सत्र का संयोजन/धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नरेंद्र नाथ राय ने किया।

वेबिनार के दूसरे दिन तीसरे अकादमिक सत्र में प्रो. बलराम शुक्ल(शिमला) ने कहा कि भारोपीय भाषा की पुनर्संरचना और जनपदीय ज्ञान-परंपराग को संचित रखने में भी संस्कृत की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वस्तुत: संस्कृत भाषा मात्र नहीं है एक तकनीक भी है। संस्कृत की एक अविच्छिन्न परंपरा है, वैकल्पिक मार्गों की बहुलता के कारण धर्मशास्त्र, भारतीयता, लोकभाषा व लोककला आदि के विकास में यह सदा सहायक रही है। संस्कृत का विस्तार संस्कृति से जुड़ा है । शाईना रिजवी(वाराणसी) ने कहा कि उर्दू जबान पूरी तरह से हिन्दुस्तानी जबान है, जबानें अपना रास्ता खुद बनाती हैं, संस्कृत का वजूद असीरिया संस्कृति में भी दिखती है। अनेक प्रमाण संस्कृत और फारसी के बेस के एक होने बारे में है।
बूटा सिंह बराड़(भिंडवाड़ा) ने बताया कि पंजाबी भाषा का आधार संस्कृत भाषा है एवं हिन्दी भाषा के शब्दों ने भी पंजाबी भाषा के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान किया है। पंजाबी हिंदी की तुलना में संयोगात्मक भाषा है। पंजाबी साहित्य शेख फरीद से शुरु होकर बुल्लेशाह, नानक, कबीर , रविदास से होते हुए आधुनिक युग तक पहुँची है। पंजाबी की लोक प्रेमकथाएं हीर -रांझा, शीरी- फरहाद आदि विश्वप्रसिद्ध हैं। वर्ष 1900 तक का समय पंजाबी साहित्य के दृष्टिकोण से संक्राति काल रहा, 20वीं सदी के बाद पंजाबी साहित्य की गुणवत्ता में निखार आया और गद्य व पद्य की विभिन्न विधाएं विकसित हुईं। सिन्धी भाषा के मोहन हिमथानी(दिल्ली) ने कहा कि सिन्धु नदी के किनारे वेदों की रचना हुई और बहुत-सी पुरातात्विक महत्व की सभ्यताएँ भी फली फूलीं। सिन्धी एक विकासशील और भरी-पूरी

भाषा है। सिन्धी भाषा के विकास में संस्कृत, हिन्दी, अरबी एवं पालि और अपभ्रंश भाषा के तत्व शामिल है। सूफियों की परंपरा पर सिन्धी भाषा का प्रभाव पड़ा है। जया जादवानी ने समकालीन सिन्धी साहित्य के माध्यम से हिन्दी और सिन्धी परंपरा को जोड़ने का प्रयास किया। अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. दिलीप सिंह(अमरकंटक) ने कहा कि हिन्दी - उर्दू भाषाओं का विकासक्रम बहुत समय तक साथ चला, उर्दू का साहित्य देवनागरी में आने से उसे अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य मिला। भारतीय भाषाओं का साहित्य साझेदारी का जाग्रत उदाहरण है। भारतीय भाषाओं के साहित्य से एक ही प्रकार की स्वर-लहरी निकलती है। हिन्दी भाषा अब केवल साहित्यिक नहीं रही, ज्ञान विज्ञान की भाषा बन गई है। प्रो सिंह ने भारतीय भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। इस सत्र का संयोजन/धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गोरखनाथ पांडेय ने किया।

चौथे सत्र में गुजराती, कोंकणी, डोंगरी और कश्मीरी भाषा और इनके साहित्येतिहास पर इन भाषाओं के अधिकारी विद्वानों क्रमशः ईश्वर सिंह चौहान(महेसाणा,गुजरात), वृषाली मांद्रेकर(गोवा), वीणा गुप्ता(जम्मू) और गौरीशंकर रैना(दिल्ली) ने महत्वपूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किए। अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए श्री विश्वास पाटिल(शहादा, महाराष्ट्र) ने मराठी भाषा- साहित्य के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला। इस सत्र का संचालन/धन्यवाद ज्ञापन डॉ. इशरत जहाँ ने किया।

पांचवाँ सत्र मुख्यतः जन भाषाओं पर केन्द्रित रहा। मैथिली, भोजपुरी, बुंदेली, अवधी, कुमाउँनी के साथ ही पूर्वोत्तर भारत और मेघालय की जन भाषाओं पर सुनील कुमार(नरसिंहपुर, मध्यप्रदेश), प्रकाश उदय(वाराणसी), सुशील शर्मा(, विद्याविंदु सिंह(लखनऊ), करुणा पांडेय(लखनऊ), माधवेंद्र पांडेय(शिलांग) तथा श्रुति पांडेय(शिलांग) ने बहुत तथ्यात्मक ढंग से अपनी बातें रखी। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सबका समाहार करते हुए डॉ. राजेन्द्र रंजन(पानीपत,हरियाणा) जी ने ब्रजभाषा का साहित्यिक परिचय भी प्रस्तुत किया। इस सत्र का संचालन/धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शुभा श्रीवास्तव ने किया।

विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान/सम्पूर्ति सत्र

आयोजन के तीसरे दिन संपूर्ति सत्र में आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यानमाला के अंतर्गत मुख्यवक्ता प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी(भोपाल) का व्याख्यान 'भारतीय भाषाओं की मूल चेतना' पर केंद्रित था। उन्होंने कहा कि भारत में भाषा का एक व्यवस्थित दर्शन रहा है। समस्त भारतीय भाषाओ में समरसता की स्थिति रही है। सभी भाषाओं में समान शब्दावली और मुहावरे रहे हैं इसमें कौन दाता और कौन ग्राहीता है, इसका महत्व नहीं है। संस्कृत एवं लोकभाषा में परस्पर संवाद होता रहा है। पूरी दुनियाँ में ये भ्रम फैलाया गया कि लोगों को संस्कृत समझ नहीं आती इस कारण प्राकृत बोलचाल में प्रचलित हुई जबकि सत्य ये है कि प्राचीनकाल से ही बहुभाषा को बढ़ावा देने का कार्य

भारतीय मनीषियों ने किया था। भारत की सभी भाषाएँ आपस में एकदूसरे को संपन्न बनाती हैं उनमें आपसी प्रतिस्पर्धा नहीं रही है। राजशेखर का मानना था कि जो काव्य ग्वाल बाल, महिलाओं व सामान्यजन तक पहुंचे वो ही श्रेष्ठ काव्य होता है। मध्यकाल मे रहीम ने अपने काव्य में फारसी और संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करके रचना की थी।

विशिष्ट अतिथि प्रो सूर्यप्रकाश दीक्षित(लखनऊ) ने कहा कि भारत की सभी भाषाएँ एक ही स्वर मुखरित करती है। भाषा में बिना शोध किये हुए अपनी रूचि से नवीन भाषा नहीं बनाई जा सकती है। वर्तमान साहित्य केवल देशकाल तक सीमित नहीं रह गया है आज साहित्य मे नित नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। आज के भाषा वैज्ञानिको के सामने सबसे बड़ी चुनौती ये है कि वे यथार्थ और आदर्श दोनों के मध्य तालमेल स्थापित करे। प्रो दीक्षित ने कहा कि प्रत्येक भाषा में साहित्य तो है किन्तु समेकित भारतीय साहित्य आज की आवश्यकता है जिसके माध्यम से भारतीय विचारधारा को दुनियाँ के समक्ष प्रगट किया जा सके।

अध्यक्षीय संबोधन देते हुए प्रो अच्युतानंद मिश्र(लखनऊ) ने कहा कि भारतीय भाषाओं की मूल चेतना वैश्विक कल्याण की चेतना है। भारतीय भाषाओं की मूल प्रेरणा का स्रोत- वेद पुराण, रामायण और महाभारत है। लिपि और भाषा मे भेद के बावजूद भारतीय साहित्य की आत्मा एक ही है। अंग्रेजों के द्वारा भारतीय भाषाओं को अनुवाद की भाषा तक सीमित रखने का प्रयास किया गया। औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से देश की भाषा और संस्कृति पर हमला किया गया। कम्प्यूटर संस्कृत की भाषा को समझता है इससे ये साबित होता है कि भारतीय भाषाएं बहुत ही अधिक वैज्ञानिक हैं क्योंकि सभी भाषा के निर्माण में संस्कृत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। दुःख है कि आज अंग्रेजी भाषा को राष्ट्रीय एकता की भाषा सिद्ध करने की चेष्टा की जा रही है।

इस सत्र में अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया तथा संचालन/धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रामसुधार सिंह ने किया।

काव्य-गोष्ठी

सायंकालीन सत्र में काव्य गोष्ठी का शुभारंभ पद्मविभूषण छन्नूलाल मिश्र जी के छंदोबद्ध आशीर्वाद से हुआ। इस अवसर पर अध्यक्षीय काव्य-पाठ करते हुए विश्वनाथ सचदेव ने "सूर्यास्त को हौले से धकियाने का सुख दिन को कुछ और बड़ा करने के सुख को सबसे बड़े सुख के रूप में रेखांकित किया, जितेन्द्र नाथ मिश्र ने "जिन्दगी में रुदन है तो हास भी है" शैलजा सिंह ने "जाने किसकी नजर लग गई अपनी सोनचिरैया को" अशोक घायल ने "तुम्हारे यादों के चंद आंसू " अभिनव अरुण ने "जिन्दगी का मजा" प्रतीक त्रिपाठी ने "मैं तुमसे और पृथ्वी से बस जीने भर की जगह चाहता हूँ " नसीमा निशां ने "पेड़ बदलते है जब कपड़े", उद्भव मिश्र ने "ये लड़की है या फौलाद" सरोज पाण्डेय "ये नदी यू ही बहा करती है", इन्द्र कुमार "दे चुका मै देकर परीक्षा" वशिष्ठ अनूप ने "मरा हर रोज मगर हर हाल मे जीना नहीं छोड़ा", इंदीवर ने "प्राण मे प्रीति बनकर समाई हुई, ये सितारों भरी रात है", पवन शास्त्री नया साल खुशिया ले आए,

ज्योति कलश छलकाये" वासुदेव उबेराय ने "रोशनी आती नहीं खिड़कियों पर" धर्मेन्द्र गुप्ता, सुरेंद्र वाजपेई, रविकेश मिश्र, अनंत मिश्र, विद्याबिन्दु सिह, वासुदेव ओबराय, मंजुला चतुर्वेदी, आदि ने काव्य पाठ किया। इनमें विश्वनाथ सचदेव(मुंबई) विद्याविन्दु सिंह(लखनऊ), अनंत मिश्र(गोरखपुर),तारा सिंह(गोरखपुर),शैलजा सिंह(गाजियाबाद), आरती स्मित(दिल्ली) उद्भव मिश्र, इंद्रकुमार, सरोज कुमार पाण्डेय(देवरिया),सुनील कुमार मानस(जूनागढ़) के अलावा सभी कवि वाराणसी के थे। कवि सम्मेलन के बीच मे नम्रता मिश्र ने छन्नूलाल जी की प्रसिद्ध पंक्ति गाकर सुनाया "खेले मसाने मे होरी, भूत पिशाच दिगंबर खेले मसाने मे होरी "।काव्य संध्या का संचालन/धन्यवाद ज्ञापन प्रकाश उदय ने किया।

इस अवसर पर प्रो उदयन, डॉ. संजय, डॉ. वंदना, डॉ.अमित, डॉ. इशरत, डॉ. गुलजबी, प्रो सर्वेश, डॉ. रेनू राय, कमलेश, डॉ. अरविंद, अनुराग, यज्ञेश्वर मिश्र, राजेश कुमार तिवारी (प्रबंधक) आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में तकनीक सहयोग प्रतीक त्रिपाठी, डॉ. अनुराधा राय और शशिशेखर ने किया।

विद्याश्री न्यास के सम्मान

पं. विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिवस समारोह के अवसर पर प्रतिवर्ष पाँच पुरस्कार दिए जाते हैं। **2021** में कोरोना महामारी के चलते सम्मान समारोह सम्भव न हो सका। अतः **2022** के साथ ही **2021** सम्मान भी दिए जाने का निर्णय लिया गया था, परन्तु बढ़ते संक्रमण को देखते हुए **2022** में पण्डित जी के जन्मदिवस समारोह के अवसर पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार में सम्मान समारोह सम्भव नहीं हो पाया है और वेबिनार के संपूर्ति सत्र में सम्मानों की घोषणा कर दी गई है।वर्ष **2021** का आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान लोकवार्ता के विश्रुत विद्वान श्री राजेन्द्र रजन चतुर्वेदी (पानीपत, हरियाणा) को उनकी कृति 'धरती और बीज' के लिए तथा वर्ष **2022** का स्मृति सम्मान प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक और कथाकार श्री विश्वास पाटिल (सहादा, महाराष्ट्र) को उनकी कृति 'कस्तूरी परिमल' के लिए दिया जाएगा।

आचार्य विद्यानिवास मिश्र लोककवि सम्मान **2021** हिन्दी मैथिली के अप्रतिम गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र (देहरादून, उत्तराखंड) को एवं वर्ष **2022** का लोककवि सम्मान भोजपुरी ख्यात कवि-गीतकार, मोजपुरी गंगावतरण के रचयिता श्री रविकेश मिश्र (बगहा बिहार) को, वर्ष **2021** का राधिका देवी लोककला सम्मान शास्त्रीय संगीत को लोक के और लोकसंगीत को शास्त्रीयता के धरातल पर प्रतिष्ठित करने वाले स्वर-साधक पं. छन्नूलाल मिश्र (वाराणसी) को तथा वर्ष **2022** का सम्मान चित्रकला के लोकपक्ष के मर्मज्ञ श्री काजी अशरफ अहमद(लखनऊ) को,सुप्रसिद्ध गीतकार श्रीयुत श्रीकृष्ण तिवारी की स्मृति में विद्याश्री न्यास की तरफ से दिया जाने वाला गीतकार सम्मान **2021** प्रसिद्ध और वयोवृद्ध गीतकार महेन्द्र सिंह नीलम (वाराणसी) को तथा गीतकार सम्मान **2022** गीतकार और नवगीत विद्या के अधिकारी अध्येता श्री इन्दीवर (वाराणसी) को, आचार्य विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान **2021** से

विश्रुत पत्रकार, चिंतक, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री अच्युतानन्द मिश्र (लखनऊ) को और पत्रकारिता सम्मान 2022 से लोकप्रिय साहित्यिक पत्रिका नवनीत के यशस्वी संपादक श्री विश्वनाथ सचदेव (मुम्बई) को सम्मानित करना विद्याश्री न्यास के लिए गौरव की बात है।

युवा -समवाय

युवा- समवाय के अंतर्गत विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी निबंध, कहानी एवं कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें निबंध के लिए उत्कर्ष अग्निहोत्री, कहानी में किंशुक गुप्ता और कविता में प्रतीक त्रिपाठी, नीलम मिश्रा और उत्कर्ष अग्निहोत्री को प्रमाण-पत्र सहित पुरस्कार दिए जाने का निर्णय लिया गया है।

पण्डित प्रसिद्ध नारायण मिश्र स्मृति व्याख्यान एवं संस्कृत कवि गोष्ठी

आज दिनांक 14/2/2022 को पं विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर विद्याश्री न्यास, श्रद्धानिधि न्यास एवं लालबहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान मे आयोजित 'यज्ञ की सनातन परंपरा' विषयक संगोष्ठी और संस्कृत कवि सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रोफेसर हरेराम त्रिपाठी द्वारा मांॅ सरस्वती, पंडित जी और पं प्रसिद्ध नारायण मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण और दीप-प्रज्ज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर प्रो.हरेराम त्रिपाठी ने 'शब्द -साक्षी', 'पश्यन्ती' एवं 'भारतीय भाषा चिन्तन की परंपराएँ' नामक पुस्तको का लोकार्पण किया।

पं. प्रसिद्ध नारायण मिश्र व्याख्यान के क्रम में प्रो हृदयरंजन शर्मा(काशी हिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी) ने कहा कि वेदो मे ये बताया गया है कि हमारी यज्ञ की परंपरा अनादि है। वेदों की प्रामाणिकता पर पूर्व मे पाश्चात्य विद्वानो के द्वारा आलोचना की गई है परंतु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानो ने ये माना है कि "वेद सृष्टि का उत्पादन करने वाला है"। प्रो शर्मा ने कहा कि सृष्टि मे जो कुछ भी घटित हो रहा है वह सभी यज्ञ का स्वरूप है। उन्होंने यज्ञ के आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक तीनों रूपों का विशद विवेचन किया. यज्ञ वस्तुतः पूरी प्रकृति के साथ जुड़ा है। यज्ञ का उद्देश्य पृथ्वी के समस्त जीवों के प्रति सकारात्मक दृष्टि रखना है। जब हम संसाधनो का दोहन करते है तो उसका हम सभी पर साइड इफेक्ट पड़ता है। यज्ञ ही वह माध्यम है जिससे हम वातावरण को शुद्ध बनाते हैं। शारीरिक और मानसिक शुद्धि हमे यज्ञ करने से ही प्राप्त होती है।

मुख्य आतिथि प्रो हरेराम त्रिपाठी ने पंडित जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि पंडित जी यज्ञ की सनातन परंपरा के जीवित उदाहरण थे। नवभारत टाइम्स का प्रधान संपादक रहते हुए दिल्ली मे पंडित जी की ख्याति सनातन जीवन जीने वाले व्यक्तित्व के रूप मे थी। पंडित जी में धर्म के सभी दस लक्षण विद्यमान थे और

सच्चे अर्थो मे वो भारतीय सनातन परंपरा के ध्वज वाहक थे। उनके व्यक्तित्व मे प्राच्य और नवीन परंपरा का मिला- जुला स्वरूप था।पंडित जी परंपरा को बंधन नहीं मानते थे बल्कि उसे वह जीवन जीने का आधार मानते थे, वे भारतीय परंपरा को चिर युवा मानते है।इनका लेखन लोक और ग्रामीण परिवेश पर मुख्यत: केन्द्रित था। पंडित जी की रचनाओं को पढ़ते हुए वेद और लोक की वृहद जानकारी मिलती है। अध्यक्षीय संबोधन देते हुए प्रो मुरली मनोहर पाठक, कुलपति लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ ने कहा कि पंडित जी सृष्टि को यज्ञ के रूप मे स्वीकार करते थे। भारतीय दर्शन की परंपरा मे यज्ञ को ब्रह्मांड की नाभि के रूप मे स्वीकार किया गया है। यज्ञ सतत् प्रवहमान एवं जगत के अधिष्ठान के रूप मे है। यज्ञ को संपूर्ण सृष्टि मे दैवीय शक्ति के रूप मे स्वीकार किया गया है। प्रो.पाठक ने कहा कि इस संगोष्ठी मे शामिल होकर हम सभी "ज्ञान यज्ञ " की संपूर्ति कर रहे है। इस अवसर पर उन्होंने पंडित विद्यानिवास जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी और उनके विराट रचना संसार को प्रणाम किया। उद्घाटन सत्र के आरंभ मे प्रो उमापति दीक्षित ने पौराणिक मंगलाचरण किया, आभासी पटल मे जुड़े सभी लोगो का स्वागत डाक्टर दयानिधि मिश्र ने एवं सत्र का संचालन प्रकाश उदय ने किया। सायंकालीन सत्र मे संस्कृत कवि गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रो. विन्देश्वरी प्रसाद मिश्र ने तथा संचालन प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी ने किया. स्वागत करते हुए डा. दयानिधि मिश्र ने विद्याश्री न्यास की तरफ से 'पं. रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान' **2021** एवं **2022** से क्रमशः श्री कौशलेन्द्र पाण्डेय एवं श्री उपेन्द्र पाण्डेय को सम्मानित करने की घोषणा की। इस अवसर पर अरविन्द कुमार तिवारी **(**बागपत**)**, उपेन्द्र पाण्डेय **(**वाराणसी**)**, कमला पाण्डेय **(**वाराणसी**)**, कामता प्रसाद त्रिपाठी **(**प्रतापगढ़**)**, कृपाराम त्रिपाठी 'अभिराम' **(**बलरामपुर**)**, कौशल तिवारी **(**राजस्थान**)**, गायत्री प्रसाद पाण्डेय **(**वाराणसी**)**, चन्द्रकान्ता राय **(**वाराणसी**)**, जनार्दन पाण्डेय 'मणि' **(**प्रयागराज**)**, धर्मदत्त चतुर्वेदी, **(**वाराणसी**)**, प्रवीण पण्डया **(**राजस्थान**)**, बलराम शुक्ल **(**दिल्ली**)**, महेश भट्ट **(**कर्नाटक**)**, राजेन्द्र त्रिपाठी 'रसराज' **(**प्रयागराज**)**, रामकृष्ण पेजत्ताय **(**अर्नाकुलम**)**, विवेक पाण्डेय **(**वाराणसी**)**, वीणा बी. भट्ट **(**तिरुपति**)**, सतीश कपूर **(**काश्मीर**)**, सदाशिव कुमार द्विवेदी, **(**वाराणसी**)**, शतावधानी आर. गणेश **(**बेंगलुरु**)**, श्रुति कानिटकर **(**मुम्बई**)**, प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र **(**वाराणसी**)**,प्रो.हरिप्रसाद अधिकारी**(**वाराणसी**)** ने काव्य पाठ किया। काव्य गोष्ठी मे सभी कवियों को प्रो. उदयन मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस वेबिनार मे तकनीकी सहयोग प्रतीक त्रिपाठी व शशिशेखर मिश्र ने किया।

अज्ञेय की सौंदर्य दृष्टि: (राष्ट्रीय संगोष्ठी**)**

यशस्वी कवि अज्ञेय के जन्मदिवस पर विद्याश्री न्यास, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' भारतीय साहित्य संस्थान न्यास/समिति **(**ट्रस्ट**)** एवं बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर के संयुक्त तत्वावधान में 'अज्ञेय की सौंदर्य दृष्टि' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी **(7** मार्च **2022)** का शुभारंभ मंचस्थ अतिथियों द्वारा कवि अज्ञेय के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीपप्रज्वलन तथा अतुल भारती के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत वक्तव्य का दायित्व

अमृतांशु शुक्ल (पूर्व प्राचार्य बुद्ध पी जी कॉलेज, कुशीनगर) ने निभाया। बीज वक्तव्य देते हुए डॉ. अरुणेश नीरन (पूर्व प्राचार्य बुद्ध पी जी कॉलेज, कुशीनगर) ने कवि अज्ञेय के जीवन व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न सन्दर्भो के साथ उनके लेखक व्यक्तित्व की निर्मिति पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि अज्ञेय के साहित्य में लोक, संस्कृति, काल, इतिहास, सौंदय सबकुछ अन्तर्गहीत है। 'असाध्यवीणा' कविता को उन्होंने इसके प्रमाण के रूप में विश्लेषित किया। अगले वक्ता के रूप में प्रो. अनंत मिश्र (पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर) ने 'अज्ञेय के काव्य में सौंदर्य बोध' विषय पर अपनी बात रखते हुए भारतीय काव्यशास्त्र व पाश्चात्य काव्यशास्त्र में सौंदर्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा कि 'सौंदर्य प्रयोजन में नहीं आनंद में है। अज्ञेय सृष्टि की लय को पकड़ा है। यह लय इनकी कविता के कथ्य और शिल्प दोनों में है। प्रो. रामदेव शुक्ल (पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर) ने 'अज्ञेय के कथा साहित्य में सौंदर्य बोध' पर अपनी बात रखते हुए हिंदी साहित्य में सौंदर्य के बदलते स्वरूप को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि प्रेमचंद ने सौंदर्य को श्रम में स्थापित किया। जैनेंद्र के स्त्री पात्रों पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि 'शेखर एक जीवनी' पहला आधुनिक उपन्यास है। उन्होंने बताया कि स्त्री के लिए जितनी कोमल भावनाएँ अज्ञेय में हैं उतना उनके समकालीन किसी कथाकार में नहीं है। उन्होंने स्त्री- पुरुष सम्बन्धों को लेकर अनेक प्रचलित मान्यताओं की जकड़न को तोड़ा। प्रो. चितरंजन मिश्र (पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, पण्डित दीनदयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर) ने 'अज्ञेय के कथेतर गद्य में सौंदर्य बोध' विषय पर अपना व्यक्तव्य देते हुए बताया कि सौंदर्य दृष्टि और दृष्टि के सौंदर्य में अंतर है।अज्ञेय ने बताया है कि जो सुंदर हो वह शिव भी हो यह जरूरी नहीं है। अज्ञेय सौंदर्य के साथ विवेक, लोक, अध्यात्म, प्रकति आदि के प्रश्न उठाते हैं। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. विश्वनाथ तिवारी (पूर्व अध्यक्ष साहित्य अकादमी, दिल्ली) ने सौंदर्य और सौंदर्य के उद्भव और विकास पर चर्चा करते हुए बताया कि सम्पूर्ण सृष्टि ईश्वर की कविता है इसलिए सबकुछ सुंदर है कुछ भी असुंदर नहीं। सुंदर और असुंदर का भेद यदि कहीं है तो विषयगत है अर्थात सब्जेक्टिव है ऑब्जेक्टिव नहीं। सौंदर्य वह है जो मन में विकार पैदा नहीं करता। उन्होंने बताया कि अज्ञेय मानते हैं कि सौन्दर्य और शिवत्व की प्राप्ति विवेक से होती है। अज्ञेय प्रकृति से जुड़े हुए हैं, इसलिए वह उनके साहित्य में विविधविध व्याप्त है। इस संदर्भ में उन्होंने आइंस्टीन और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सत्य और सौन्दर्य पर हुई चर्चा का भी अज्ञेय साहित्य के संदर्भ में उल्लेख किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य प्रो. महेश्वर मिश्र (अज्ञेय साहित्य संस्थान) ने अज्ञेय को प्रकृति का प्रेमी बताया उन्होंने कहा कि अज्ञेय की लगभग रचनाओं के शीर्षक प्रकृति पर आधारित हैं।उन्होंने कहा कि अज्ञेय की सौंदर्य-दृष्टि को वही समझ सकता है जिसके पास उनके मौन को मापने की क्षमता है। अज्ञेय समग्र लेखकीय विवेक की बात करते हैं। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सिद्धार्थ पाण्डेय (प्राचार्य, बुद्ध पी जी कॉलेज, कुशीनगर) ने किया। कार्यक्रम का

संचालन डॉ. गौरव तिवारी (हिंदी विभाग, बुद्ध पी जी कॉलेज, कुशीनगर) ने किया। जनसम्पर्क/व्यवस्था-संयोजन डॉ अशोक मद्धेशिया (बुद्ध पी जी कॉलेज, कुशीनगर) ने किया।

डॉ दयानिधि मिश्र
सचिव, विद्याश्री न्यास